बकरी पालन में पोषण एवं प्रजनन

जय प्रकाश* और **पी.के. गुप्ता****

"भारतीय कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में बकरी की महत्वपूर्ण भूमिका है। बकरियों को गरीबों की गाय कहा जाता है। बकरी पालन प्रायः सभी जलवायु में कम लागत, साधारण आवास, सामान्य रखरखाव तथा पालन-पोषण के साथ संभव है। भारत में लगभग 21 मुख्य बकरियों की नस्लें पाई जाती हैं। इन्हें दूध मांस और ऊन के लिए पाला जाता है। देश में कृषकों की आमदनी बढ़ाने में बकरियों की अहम भूमिका हो सकती है।"

पशु आहार विशेषांक

बकरियों की नस्लों को उत्पादन के आधार पर तीन भागों में बांटा गया है:

दुधारू नस्लें: जमुनापारी, सुरती, जखराना, बरबरी एवं बीटल।

मांसोत्पादक नस्लें: ब्लैक बंगाल, सिरोही, मारवाड़ी, मेहसाना, संगमनेरी, कच्छी तथा उस्मानाबादी।

ऊन उत्पादक नस्लें: कश्मीरी, चांगथांग, गद्दी, चेगू आदि, जिनसे पश्मीना ऊन की प्राप्ति होती है।

*वैज्ञानिक (पशुपालन); **अध्यक्ष कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, दिल्ली

बकरी चराने में विभिन्न पद्धतियों का इस्तेमाल होता है :

सीमित क्षेत्र चराई

यह छोटे पशुपालकों द्वारा अपनायी जाने वाली प्रणाली है, जो 5-6 बकरियां पालते हैं। इन्हें चराई क्षेत्र में खूंटें या झाड़ी से 1-5 मीटर रस्से से बांध कर रखते हैं। बकरी इस सीमित क्षेत्र में चराई करती हैं।

गहन चराई

यह प्रणाली देश में सामान्य प्राथमिकता के तौर पर देखी जा सकती है। दिन के समय बकरियां प्राकृतिक वनस्पति, झाड़ियों तथा

सारणी 1. बकरियों द्वारा पसंद किये जाने वाले दलहनी व अदलहनी चारे

क्र.सं.	चारे की किस्म	दलहनी चारे	अदलहनी चारे
1.	सूखे चारे	चना, मटर, अरहर, मूंग, उड़द, ग्वार, सेम, मटर व सनई	भूसा: गेहूं, जौ व जई कड़बी: ज्वार, बाजरा व मक्का है : सूखी घास
2.	हरे चारे	बरसीम, लूसर्न, मटर, लोबिया, ग्वार, स्टाइलो व अन्य नेपियर, चारागाह दलहन	ज्वार, मक्का, बाजरा, मक्का चरी, पैरा, घास, जई व मानसूनी घासें

बकरी प्रबंधन

- नियमित रूप से आवास की सफाई करनी चाहिये।
- बाड़ों के अन्दर व बाहर नियमित रूप से सप्ताह में एक या दो बार बिना बुझे चूने का छिड़काव करें।
- प्रतिमाह बाड़ों के अन्दर फर्श पर सूखी घास-फूस डालकर जला देनी चाहिये। इससे बाड़ों के भीतर तथा बाहर पूर्ण विसंक्रमण हो जाता है तथा परजीवियों की सभी अवस्थायें नष्ट हो जाती हैं।
- प्रति तीन से चार माह के अंतराल पर बाड़ों की जमीन की मिट्टी कम से कम 6 इंच तक खोदकर निकाल दें व नई साफ मिट्टी भर देने से संक्रमण की आशंका कम हो जाती है।
- रोगी पशुओं को अलग रखकर उनका उचित उपचार एवं देखभाल करनी चाहिये।
- खरीदे गये पशुओं को पहले से पल रहे झुण्ड में नहीं मिलाना चाहिये तथा उन्हें 21 दिनों तक अलग रखना चाहिये।

आमदनी बढ़ाएं बकरीपालन से

सारणी 2. बकरियों के लिए आहार की मात्रा

बकरियों के लिये दाना मिश्रण		एक वर्ष तक की आयु के मेमनों के लिए	वयस्क बकरियों के लिए
क्र.सं.	खाद्य पदार्थ	भाग	भाग
1.	मक्का का दाना /जौ/ज्वार/बाजरा	47	32
2.	मूंगफली/तिल/सूरजमुखी की खली	30	30
3.	गेहूं/ चावल का चोकर	20	20
4.	दाल के टुकड़े	0	15
5.	खनिज मिश्रण	1.5	1.5
6.	साधारण नमक	1.5	1.5
	योग-	100	100

बकरी प्रजनन संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां

- बकरियों का औसत जीवनकाल 12 वर्ष होता है।
- सदैव समूह में शुद्ध प्रजाति का 15 माह तक का बकरा होना चाहिए।
- 18-24 माह का नर 25-30 मादा को गर्भित कर सकता है एवं पूर्ण परिपक्वता 2-2.5 वर्ष होने पर 50-60 मादाओं को गर्भित कर सकता है।
- बकरा संभोग के लिये जाड़े के मौसम में ज्यादा उत्तेजित रहता है।
- मादा 15-18 माह में संभोग के लिये परिपक्व होती है, परन्तु अच्छी खिलाई-पिलाई एवं प्रबंधन द्वारा इस समय को तीन से पांच माह तक कम किया जा सकता है।
- बकरियों में गर्मी का समय 36 घंटे तक होता है एवं गर्भकाल अवधि 145-150 दिनों की होती है।
- जिन बकरों की अच्छी एवं नियमित खिलाई करवाई जाती है वे 8-10 वर्ष तक प्रजनन के योग्य रहते हैं।

फसल के अवशेषों को खाती हैं। रात्रि में बकरियों के झुंड को रात्रिकालीन आवास में रखा जाता है। इस आवास में आहार का कोई प्रबंधन नहीं होता है। कुछ प्रदेशों में चरवाहे 3-6 माह तक झुंड के साथ अपने ग्राम से बहुत दूर चले जाते हैं एवं फिर लौटते हैं।

शून्य चराई प्रणाली

बकरियां स्थायी रूप से एक ही स्थान पर रखी जाती हैं और चारा-दाना वहीं पर दिया जाता है। यह प्रणाली उनके लिये उपयोगी होती हैं, जो व्यापक पैमाने पर बकरी पालन कर रहे हों या अनुसंधान के लिये कुछ कार्य कर रहे हों। दिल्ली क्षेत्र में यह प्रणाली अत्यन्त उपयोगी एवं अपनाने योग्य है।

अर्द्धगहन प्रणाली

इस पद्धति में उपरोक्त दोनों प्रणालियों का फायदा रहता है। इसमें चराई एवं बांधकर बकरियों को पालना, दोनों की समुचित व्यवस्था पशुपालक अपनी आवश्यकता एवं संसाधनों के हिसाब से करता है। इसमें 40-60 प्रतिशत पोषण चराई से एवं शेष, बकरी आवास में, पशु आहार के माध्यम से दिया जाता है।

15 दिनों से बड़े मेमनों को स्टार्टर राशन, जो कि आसानी से मेमनों को पच सके, दिया जाता है। इसमें मक्का 20 प्रतिशत, चना 20 प्रतिशत, मूंगफली की खली 35 प्रतिशत तथा गेहूं की चूरी 22 प्रतिशत, क्रूड प्रोटीन 18-20 प्रतिशत, कुल पाच्य तत्व 72 प्रतिशत एवं ऊर्जा 2.5-2.9 मेगा कैलोरी/कि.ग्रा. खनिज मिश्रण 2.5 प्रतिशत, साधारण नमक 0.5 प्रतिशत शामिल हैं।

मेमनों के 4 से 8 कि.ग्रा. भार पर

बकरियों का आहार

- बकरियों को अगर चरागाह में नहीं भेजा जाता, तो उन्हें तीन बार–सुबह, दोपहर व शाम को चारा देना चाहिए। उन्हें इतना आहार अवश्य मिलना चाहिए, जितना वे एक बार में समाप्त कर लें।
- एक औसत दुधारू बकरी को दिन में लगभग 3.5–5.0 कि.ग्रा. चारा मिलना चाहिए। इस चारे में कम से कम एक कि.ग्रा. सूखा चारा तथा 2.0–2.5 कि.ग्रा. हरा चारा (कोई दलहनी घास) मिलना चाहिए।

बढ़ता महत्व बकरी के दूध का

50–250 ग्राम दाने का मिश्रण एवं 9–20 कि.ग्रा. पर 350 ग्राम दाने का मिश्रण प्रतिदिन देते हैं।

बड़े मेमनों को दलहनी चारा सामान्य बढ़वार के लिये देना चाहिए। कम गुणवत्ता वाले चारे में 12–14 प्रतिशत पचनीय क्रूड प्रोटीन एवं कुल पाच्य तत्व 63–65 प्रतिशत 350–400 ग्राम प्रतिदिन मिलाकर देना चाहिए।

इसमें मक्का 20 प्रतिशत, चना 32 प्रतिशत, मूंगफली की खली 30 प्रतिशत, गेहूं की चूरी 15 प्रतिशत, खनिज मिश्रण 2.5 प्रतिशत, साधारण नमक 0.5 प्रतिशत का मिश्रण होता है।

फिनिशर राशन

कार्बोहाइड्रेट ऊर्जा वाले खाद्य, फैटी कारकस के लिये देना चाहिए। इस दाने के मिश्रण में 6–8 पचनीय क्रूड प्रोटीन एवं 60–65 कुल पाच्य पोषक तत्व होने चाहिए।

वयस्क बकरियों के लिये दाने की मात्रा

जीवन निर्वाह राशन: 250 ग्राम प्रति 50 कि.ग्रा. भार

उत्पादन राशन: 450 ग्राम प्रति 2.5 ली. दूध/मादा

बकरियों के आहार की मात्रा

- एक वयस्क बकरी/बकरे को 50 कि.ग्रा. भार के पीछे 500 ग्राम राशन।
- दुधारू बकरी के प्रति 3 कि.ग्रा. दूध उत्पादन पर 1 कि.ग्रा. राशन।
- नौ से 12 माह तक की आयु के मेमनों को 250–500 ग्राम राशन प्रतिदिन।
- दूध से सूखी बकरी को सुबह–शाम में 400 ग्राम राशन प्रतिदिन देना चाहिए।

बकरी में आहार प्रबंधन है जरूरी

गर्भवती राशन: अंतिम दो माह गर्भकाल में 220 ग्राम/दिन

बकरे का राशन: 400–500 ग्राम राशन प्रतिदिन

बकरियों में जनन संबंधी रोग

- बकरियों का गर्मी में न आना तथा बार–बार गर्मी में आना परन्तु गर्भधारण न करना।
- गर्भपात की समस्या, प्रसव में कठिनाई, योनि या बच्चेदानी का पलटकर बाहर आना।
- जेर का समय से न गिरना।
- इन्हीं प्रसूतिजन्य रोगों की वजह से उनकी उत्पादकता कम हो जाती है। ■